गरुड़ासन

पवित्र ग्रन्थों की पूजा के लिए एक मंच

GARUDASAN

An altar for the worship of Holy Scriptures

परिचय

गरूड़ासन, लकड़ी का बना एक त्रिस्तरीय मंच है जो असमिया वैष्णव संप्रदाय के परिवारों द्वारा घर के विशिष्ट स्थान पर पूजा वेदी के रूप में स्थापित किया जाता है। रंगों से सृजित लकड़ी का बना यह मंच भगवत पुराण, गुणमाला इत्यादि पवित्र ग्रन्थों की पूजा हेतु प्रयुक्त होता है। इसकी तीनों सतहों पर भगवन विष्णु के वाहन गरूड़ की प्रतिमा होने के कारण इसका नाम गरूड़ासन रखा गया है। सत्रों (वैष्णव मठ)में पवित्र धर्म ग्रन्थों के पूजन हेतु प्रयुक्त वृहद आकर में निर्मित बहुस्तरीय सिंहासनों से भिन्न, त्रिस्तरीय गरूड़ासन पारंपरिक रूप से घर पर पूजा करने के लिए उपयुक्त हैं। माना जाता है कि आसन का उपयोग करते हुए पवित्र ग्रन्थों की पूजा में विश्वास महापुरूष श्रीमंत शंकरदेव और उनके शिष्यों द्वारा रखे गए 15 वीं शताब्दी ईस्वी के उत्तरार्ध में नव-वैष्णव आंदोलन के साथ उभरा है। यह प्रदर्शनी असम के वैष्णव पंथियों द्वारा सिंहासन और गरूड़ासन की धार्मिक उपयोगिता के बीच सामजिक-सांस्कृतिक महत्व और दार्शनिक सोच के व्याख्या का प्रयास है।

आरोहण क्रमांक/
Accession No.:
2001.53

संकलन स्थान/
Place of collection :
माजुली, असम / Majuli, Assam

समुदाय / Community:
असमिया वैष्णव संप्रदाय/ Assamese Vaisnavites

Introduction

Garudasan is a three tiered wooden platform used by the families of the Assamese Vaisnavas to set a place of worship in the specified place of the house. This colourful wooden altar is used for worshiping the Holy Scriptures like the Bhagata Purana, Gunamala etc. Garuda (an Eagle), being the vehicle of Lord Vishnu, this Asana (altar) is named after the sculptures of Garuda it contains in all the three tiers of the platform. Unlike the massively built structure of Singhasana (multitiered wooden altar for Holy Scripture) worshipped in the Satras (Vaisnavite Monastries), the three tiered Gadudasana is traditionally meant for worshipping at home. The faith in the worship of Holy Scriptures using Asanas (altar for Holy Scriptures) is said to have emerged with the neo-vaisnavite movement in the late 15th Century AD, laid by Mahapurush Srimanta Sankardev and his disciples. This exhibition attempts to describe the socio-cultural significance and the Philosophical thought lingering with the religious utilities of Singhasana and Garudasana by the Vaisnavites of Assam.

संरचना का महत्व

इस त्रिस्तरीय आसन के शीर्ष स्तर पर वैष्णव उपदेशों से युक्त गुणमाला (भगवान् की सम्पूर्ण व्याख्या करती पांडुलिपि) पूजन हेतु स्थापित किया जाता है। यह माना जाता है कि तीनों परतें तीन महत्वपूर्ण या नियंत्रक गुणों (1) सत्य (2) दया और (3) क्षमा का प्रतिनिधित्व करते है जो एक सफल गृहस्थ एवं दाम्पत्य जीवन और परिवार के लिये अति आवश्यक है। महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव ने गरूडासन का यह भाव नव-वैष्णव दर्शन से एक बेहतर समाज की स्थापना और लोगों को पूजा के सामान अवसर उपलब्ध कराने के लिये किया। उनका दृढ़ विश्वास था कि 'जहाँ भक्त है वहाँ भगवान् है'; गरूड़ पर विराजमान आसन भगवान् और भक्त का सटीक उदाहरण है।

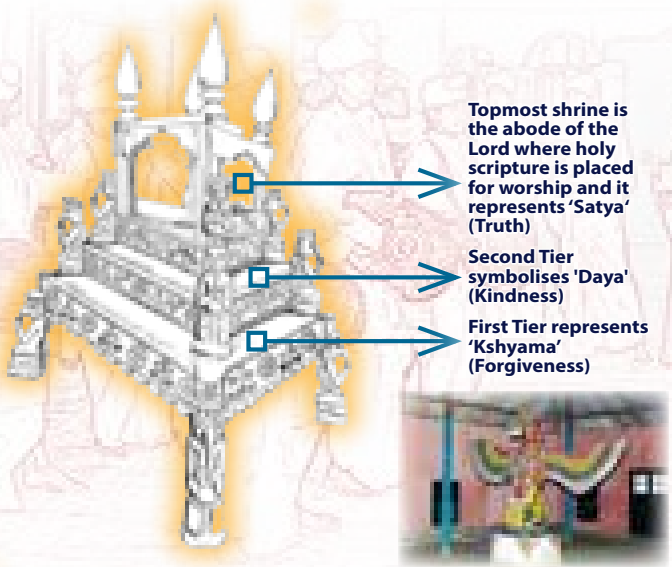

Significance of the structure

The three tiered Garudasana is believed to have been founded with the Vaisnavite preachings of the Gunamala (a Holy Manuscript that gives a complete description of the Lord) is established on topmost tier of the altar for worship. It is said that the three tiers represent three important commandments; (1) Truthfulness (Satya), (2) Kindness (Daya) and (3) Forgiveness (Kshyama) which essentially is required for a successful Grihasthi, married and family life. Mahapurush Srimanta Sankardeva laid this essence of Garudasana to provide equal opportunity of worship and the preachings of the neo-vaisnavite philosophy for a better society. He firmly believed that "where there is Bhakta (devotee), there is Lord"; the Asana (altar) seated on Garuda is a perfect example of the Lord and his Bhakta (devotee); the presence of Garudasana in the household itself is believed to accord the benign presence of the Lord.

आसनों की स्थापना / Establishment of Asanas (Altars)

असम के वैष्णव संप्रदाय में जब भी कोई नया मकान बनता है, परिवार उसमे पूजा स्थल का निश्चित करता है, परिवार जन सत्र (वैष्णव मठ) में जाकर सत्राधिकार (सत्र प्रमुख) से घर में गरूड़ासन के स्थापना की विनती करते है। सत्राधिकार एक विशेषज्ञ भगत (साधू) को उनके घर समुचित धार्मिक सेवा प्रदान करने हेतु नियुक्त करते है। सत्र का सर्वोच्च अधिकारी होने के कारण सत्राधिकार को केवल नामघर (सत्र का प्रार्थना कक्ष) में सिंहासन स्थापित करने का अधिकार है।

When a new house is constructed, the Vaisnava family in Assam endorses to establish a place of worship in the house. The family will visit the Satra (Vaishnava Monastry) and pray to the Satradhikar (Head of the Satra) for setting up Garudasana for the family. Satradhikar will appoint a specialised Bhagat (monk) to visit the house and provide appropriate religious service to them. Satradhikar (Head of the Satra) being the highest authority of the Satra is entitled only for establishing Singhasana (multi-tiered altar) in the Namghar